बहुत ज़्यादा जेबें

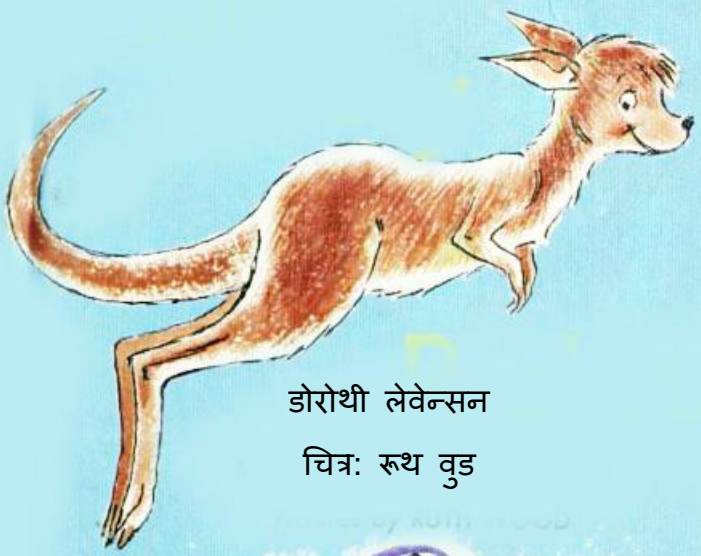

डोरोथी लेवेन्सन

चित्र: रूथ वुड

बहुत ज़्यादा जेबें

डोरोथी लेवेन्सन

चित्र: रूथ वुड

जोई एक बच्चा कंगारू था.

वो अपनी मां की जेब में रहता था.

मां की जेब गर्म और मुलायम थी,

वो बच्चे के सोने और बढ़ने के लिए बिल्कुल सही थी.

जोई पूरे दिन यही करता था.

वो ज्यादातर समय - सोता था और बढ़ता था.

लेकिन उसे कभी-कभी जेब में खड़े होकर

बाहर देखना अच्छा लगता था.

एक दिन जोई खड़ा होकर इधर-उधर देख रहा था.

"वहां क्या है?" उसने पूछा.

उसकी माँ ने कहा, "वो बाहर की दुनिया है."

फिर जोई ने बाहर की दुनिया को देखा.

उसने घास और पेड़ देखे और
उसने अन्य कंगारूओं को
कूदते हुए देखा.

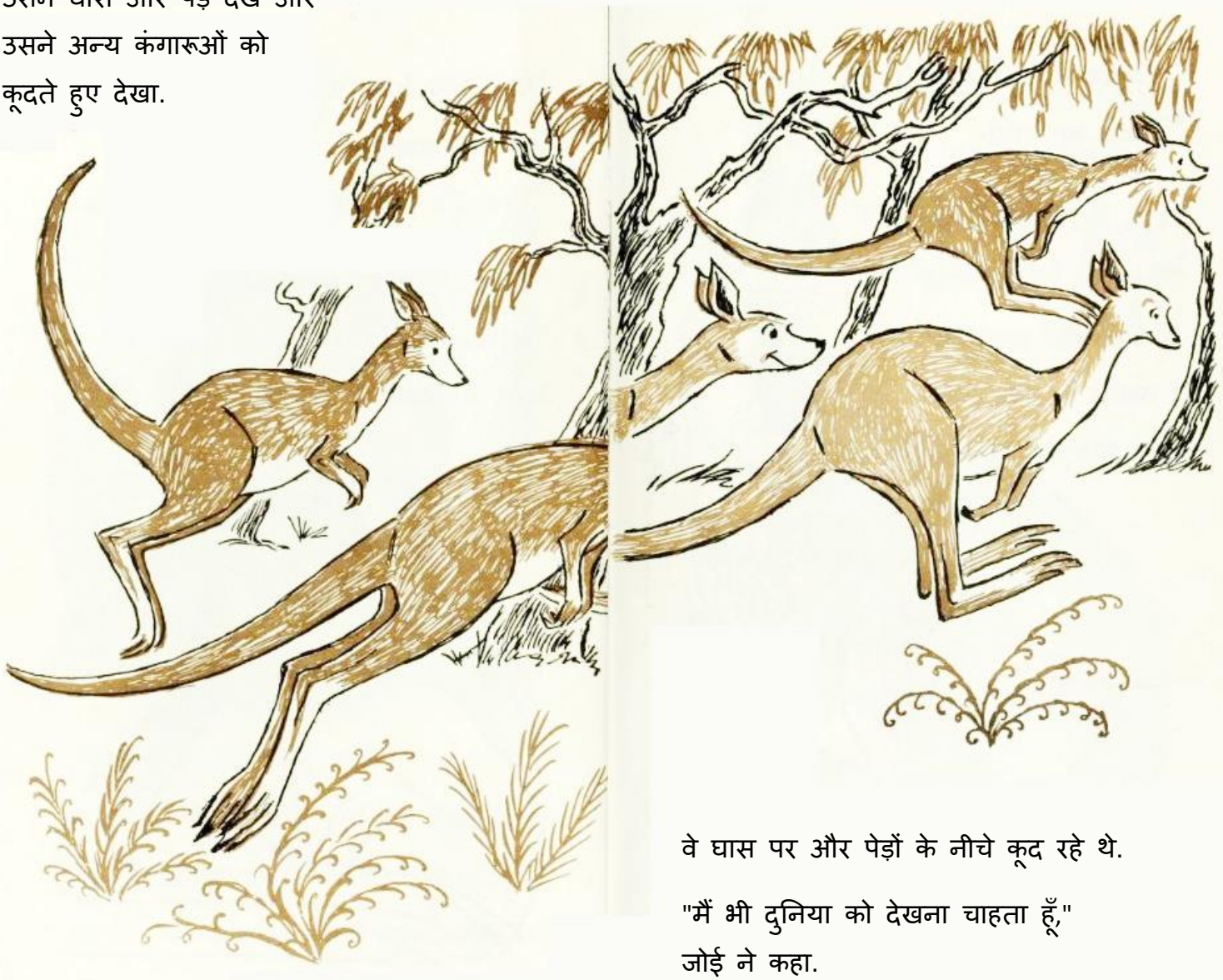

वे घास पर और पेड़ों के नीचे कूद रहे थे.

"मैं भी दुनिया को देखना चाहता हूँ,"
जोई ने कहा.

"दुनिया बाहर है," उसकी माँ ने कहा. "चारों ओर देखो."

जोई ने कहा, "अब मैं इस पुरानी जेब से बाहर निकलना चाहता हूं. मैं बाहर निकलकर दुनिया को देखना चाहता हूं."

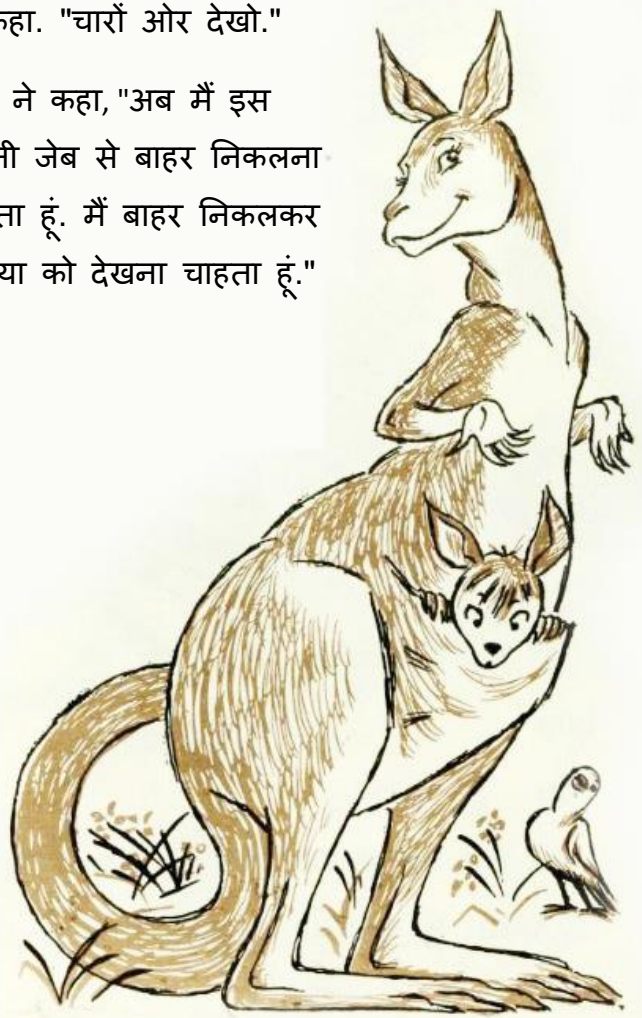

"नहीं, जोई," उसकी माँ ने कहा. "मेरी जेब में वापस जाओ. बाहर निकलने से पहले तुम्हें थोड़ा और बड़ा होना होगा."

"बड़ा! बड़ा! आप मुझ से बार-बार बस यही कहती हैं," जोई ने कहा.

"मैं अब काफी बड़ा हो गया हूँ. ज़रा देखें! अब यह जेब मेरे लिए बहुत छोटी है."

"जोई," उसकी माँ ने कहा, "इस तरह इधर-उधर कूदना बंद करो! जब तुम शांत बैठोगे तभी जगह बनेगी."

"बैठो! बैठो!" जोई ने कहा. "मुझे बस इतना बताएं. क्या मुझे जीवन भर इसी जेब में बैठना पड़ेगा?"

"जल्द ही तुम बड़े हो जाओगे," उसकी माँ ने कहा. "फिर तुम बाहर निकल सकोगे."

"बड़े होगे! बड़े होगे! आप मुझसे हमेशा यही कहती रहती हैं," जोई ने कहा. "लेकिन मैं अब दुनिया को देखना चाहता हूं."

"जोई," उसकी माँ ने कहा, "शांत बैठो और सो जाओ."

"सो जाओ! सो जाओ! आप मुझ से बस यही कहती हैं," जोई ने कहा. "मुझे नींद नहीं आ रही है."

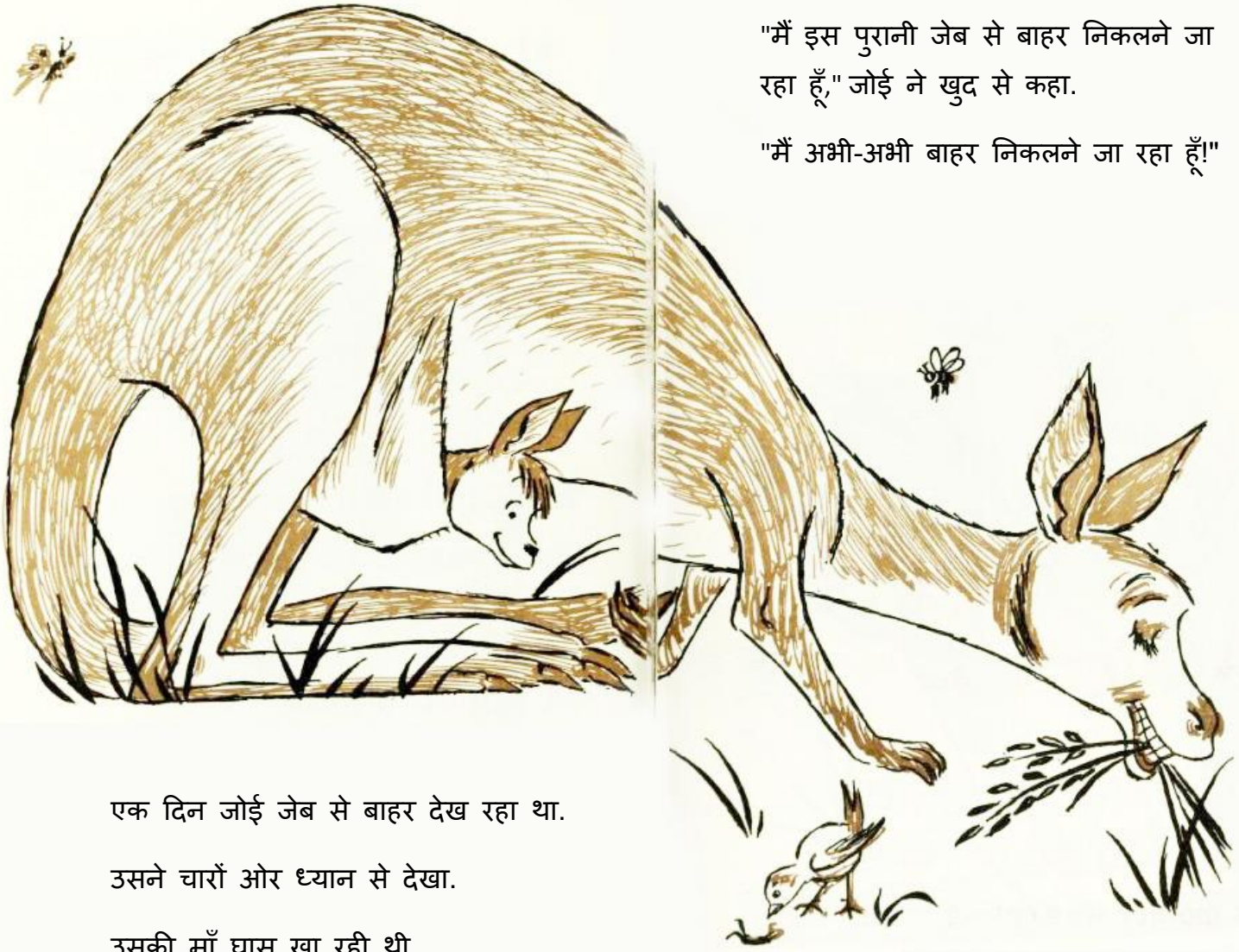

"मैं इस पुरानी जेब से बाहर निकलने जा रहा हूँ," जोई ने खुद से कहा.

"मैं अभी-अभी बाहर निकलने जा रहा हूँ!"

एक दिन जोई जेब से बाहर देख रहा था.

उसने चारों ओर ध्यान से देखा.

उसकी माँ घास खा रही थी.

जोई ने पैर बाहर निकाले.

फिर उसने अपनी पूंछ निकाली.

फिर जोई घास पर बाहर आ गया.

"अरे बाप रे!" जोई ने कहा.

घास नरम नहीं थी.

लेकिन जोई खुश था.

"अब मैं कूदूंगा," जोई ने कहा.

उसने छलांग लगाई,

मगर जोई नीचे गिर गया.

वो फिर उछला.

लेकिन वो फिर से नीचे गिर गया.

"अरे बाप रे!" जोई ने कहा.

घास नरम नहीं थी.

जोई फिर से कूदा.

वो फिर से नीचे गिरा.

उसने दुबारा छलांग लगाई.

पर इस बार वो नहीं गिरा!

इस बार वो छलांग लगाते-लगाते आगे गया.

वो घास के ऊपर और पेड़ों के नीचे गया.

उसकी माँ ने उसे दूर कूदते हुए नहीं देखा.

वो अभी भी घास खा रही थी.

जोई को कूदने और उछलने में मज़ा आया.

वो इधर-उधर घूमता रहा.

उसे दुनिया देखने में मजा काफी आया.

फिर जोई बैठ गया.

उसने चारों ओर अपनी मां की तलाश की.

लेकिन उसे अपनी माँ कहीं नहीं दिखाई दी.

"मुझे एक जेब चाहिए," जोई ने कहा.

जोई जेब की तलाश में आगे बढ़ा.

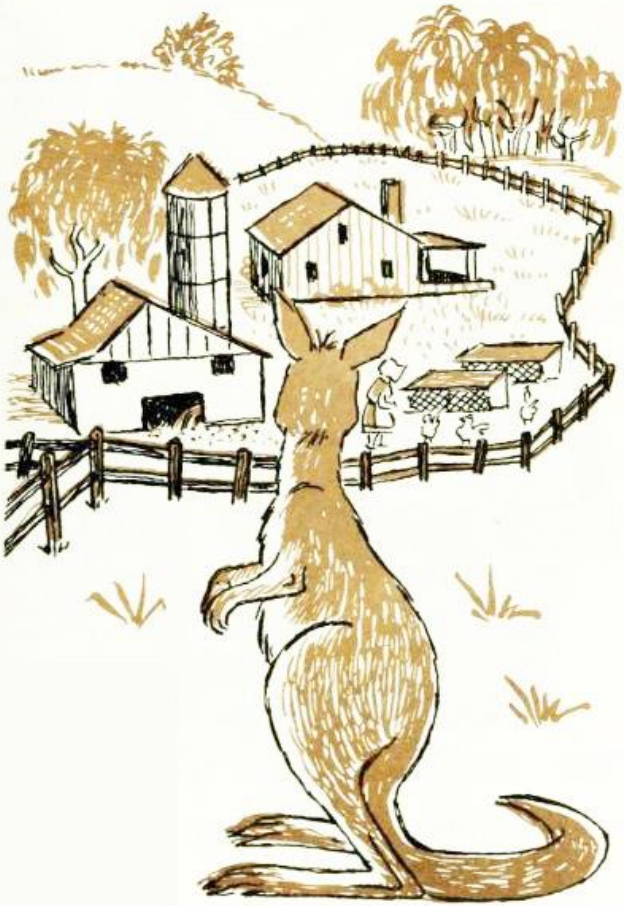

वो कूदते हुए आगे चला,

वो घास के ऊपर और पेड़ों के नीचे उछला.

वो कूदते-कूदते खेत में पहुंचा.

वहां किसान की पत्नी थी.

"बढ़िया!" जोई ने कहा. "अब मुझे एक जेब दिखाई दे रही है."

किसान की पत्नी के ऐप्रन में एक बड़ी जेब थी.

वो गर्म और मुलायम लग रही थी.

फिर जोई उस जेब में कूद गया

वो छलांग लगाकर जेब में घुस गया.

जोई को यह नहीं पता था कि उस जेब में पहले से कुछ रखा था.

चर्र! चर्र!

पिचक! पिचक!

स्क्विश! स्क्विश!

"बाप रे!" किसान की पत्नी चिल्लाई.

फिर छलांग लगाकर जोई उसकी जेब से बाहर कूद गया.

छलांग लगाकर वो वहां से दूर चला गया.

"वो एक अच्छी जेब नहीं थी!" जोई ने कहा.

फिर जोई ने इधर-उधर देखा.

उसने एक लड़के और एक लड़की को देखा.

लड़के के पास एक बड़ा स्कूल बैग था.

"बहुत अच्छा!" जोई ने कहा.

"अब मुझे एक जेब दिखाई दी है."

जोई ने एक छलांग लगाई!

और फिर वो स्कूल बैग में घुस गया.

"यह क्या?" जोई ने कहा.

"मुझे इसकी ज़रुरत नहीं है."

"यह क्या है?" जोई ने कहा.

"मुझे वो भी नहीं चाहिए."

"यह क्या है?" जोई ने कहा.

"मुझे यह पसंद है."

पर इतनी देर में लड़का बस में चढ़ गया.

जोई ने भी वही किया!

धक्के खाती स्कूल बस आगे बढ़ी.

वो एक अच्छी सवारी थी.

वो उसकी माँ की जेब जैसी ही एक सवारी थी.

फिर जोई सो गया.

जागने पर जोई ने अपने चारों ओर देखा.

वहाँ सब तरफ लड़के और लड़कियां थे.

फिर किसी ने कहा, "शांत बैठो बच्चों!"

"शांत बैठो?" जोई ने कहा.

"अरे, नहीं! मुझे यहाँ से किसी तरह निकलना है."

वो बैग से बाहर कूदा.

"अरे देखो!" एक लड़के ने कहा.

"एक कंगारू! एक बच्चा कंगारू!"

जोई दरवाजे से बाहर निकला.

"वापस लौटो!" लड़के और लड़कियां चिल्लाए.

"वापस आओ, कंगारू!"

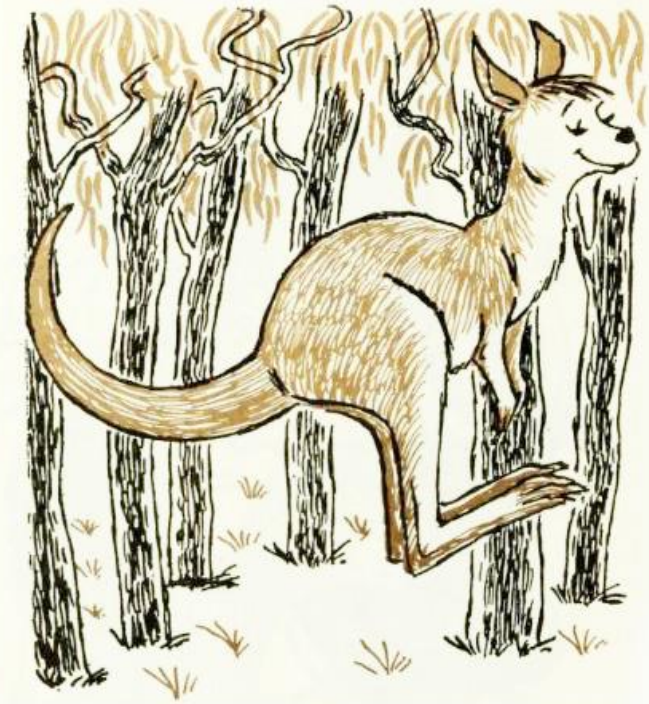

लेकिन जोई वहां से चला गया.

वो क्लास में शांत नहीं बैठना चाहता था.

उसने छलांग
लगाईं, वो कूदा,

फिर जोई कुछ बड़े
पेड़ों के नीचे पहुँचा.

तभी उसे एक ट्रक दिखाई दिया.

ट्रक एक पेड़ के पास खड़ा था.

"बहुत अच्छा!" जोई ने कहा.

"वहाँ एक जेब है!"

फिर उसने एक छलांग लगाई

और वो जेब में कूद गया.

इसके बाद ट्रक चल पड़ा.

धक्का-मुक्की, टक्कर खात!

वो एक अच्छी सवारी थी.

लेकिन जेब मुलायम नहीं थी.

"यह क्या है?" जोई ने कहा.

"मुझे इसकी ज़रुरत नहीं है."

"यह क्या है?" जोई ने कहा.

"मुझे वो भी नहीं चाहिए!"

पर ट्रक अपने रास्ते चलता गया.

डाकिए ने नहीं देखा कि जोई क्या कर रहा था.

लेकिन किसान ने जरूर देखा.

किसान की पत्नी ने भी देखा.

किसान ट्रक के पीछे भागा.

किसान की पत्नी किसान के पीछे दौड़ी.

"देखो! देखो!" उन्होंने डाकिया को रोका.

जोई ने किसान की पत्नी को देखा.

वो दुबारा उसकी जेब में नहीं जाना चाहता था.

फिर छलांग लगाकर

जोई पेड़ों के नीचे और घास
के ऊपर से आ गया.

"मुझे एक जेब चाहिए," जोई ने कहा.

"मुझे एक गर्म नरम जेब चाहिए जिसमें
मेरे अलावा और कुछ भी नहीं हो."

तभी जोई ने घास में कुछ कंगारू देखे.

फिर उसने अपनी माँ को देखा. "जोई, जोई!" उसकी माँ ने कहा. "तुम कहाँ गए थे?"

"मैं दुनिया देखने के लिए चला गया था," जोई ने कहा.

"ओह," उसकी माँ ने कहा. "और दुनिया तुम्हें कैसी लगी?"

जोई ने कहा, "दुनिया जेबों से भरी थी. लेकिन सभी जेबें चीजों से भरी थीं. दुनिया में मैंने कोई भी ऐसी जेब नहीं दिखी जो सिर्फ मेरे लिए हो!"

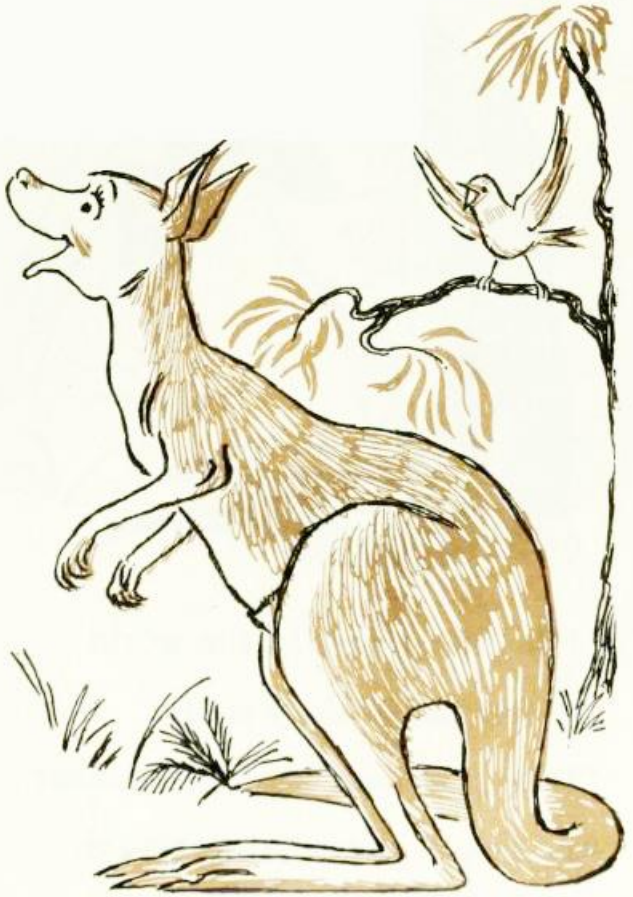

समाप्त

"दुनिया में सबसे अच्छी जेब यही है," जोई ने कहा.

"फिर अंदर कूदो," उसकी माँ ने कहा.

और जोई ने ठीक वही किया.